राजेंद्र यादव

जन्म – २८ अगस्त, १९२९

प्राक्कथन

नई पीढी के समर्थ कथाकार और समीक्षक राजेन्द्र यादव का नाम समकालीन रचनाकारो में अपरिचित नहीं है । इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओंमें लेखन किया हैं । काव्य,अनुवाद, समीक्षक,सम्पादक आदि क्षेत्र में सफलता से लेखन करते हुए भी इन्होंने कहानी - उपन्यास लेखन में ख्याति अर्जित की है । बचपन से शारीरिक अभाव और विषमताओंसे जुझनेवाले यादव जी ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गिय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण अत्यन्त खुलेपन से किया है । यादव जी स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी के सशक्त कहानीकार है ।

राजेन्द्र यादव की कहानियों पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे तब मिली जब मैंने उनका ' मेरी प्रिय कहानियाँ ' यह कहानी संग्रह पढा । स्वातंत्र्योत्तर भारत के मध्यमर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रांकन इनके साहित्य में जितना है, उतना अन्य किसी कहानीकार के कहानियों में मुझे नजर नहीं आया । उनकी कहानियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया । फलस्वरुप मैंने यादव जी के कहानियों का अनुशीलन करने का दृढ संकल्प किया । इस लघु शोध-प्रबन्ध के सहारे यह संकल्प साकार हुआ ।

राजेन्द्र यादव पर अब तक करिबन दस शोध छात्राओं ने शोध - कार्य किया है । वि.रामकोट्या ने ' राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में अनुस्युत जीवनमूल्य ' शीर्षक के अन्तर्गत सन १९८० में अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण किया । प्रेमलता बोरा नें राजेन्द्र यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन' शीर्षक के अन्तर्गत नागपुर विश्वविद्यालय में सन १९८२ में तो उषा तिवारी ने ' आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का अनुशीलन' यह

शोध-प्रबन्ध सागर विश्वविद्यालय से पूर्ण किया । कुमारी शशीकला त्रिपाठी ने ' राजेन्द्र यादव : संवेदना और शिल्प' शीर्षक के अन्तर्गत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन १९८६ को अपना शोध-प्रबन्ध पूर्ण किया । शशि रावत ने ' आधुनिकता की दृष्टि से राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से पंजाब विश्वविद्यालय से सन १९८८ को अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया । भारती शेळके ने शिवाजी विश्वविद्यालय से ' राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में चित्रित परिवार' शीर्षक से अपना शोध-प्रबन्ध पूरा किया । नीरज शर्माने एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय बम्बई से' राजेन्द्र यादव के साहित्य में व्यक्ति और समाज का चित्रण ' शीर्षक से तथा आचार्य एस.के. ने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से' राजेन्द्र यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शीर्षक से शोध-कार्य किया है । प्रा.अर्जुन चव्हाण ने ' राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन : एक अनुशीलन' शीर्षक से शिवाजी विश्वविद्यालय से सन १९९० को अपना शोध-प्रबंध पूरा किया तथा प्रा. कु.नसरीन शेख ने ' राजेन्द्र यादव के' सारा आकाश' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन' शीर्षक से शिवाजी विश्वविद्यालय में सन १९९१ को अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा किया ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न थे ...

१ राजेन्द्र यादव जी की कहानियों की विशेषताएँ क्या है ?

२ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में राजेन्द्र यादव का स्थान ?

३ राजेन्द्र यादव की कहानियों में चित्रित समस्याएँ ?

राजेन्द्र यादव के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करते समय मैंने उपरोक्त सवालों का हल ढूँढने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध चार अध्यायो में विभाजीत है ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में राजेन्द्र यादव का जीवन परिचय दिया है । साथ ही साथ उनके कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है । इस अध्याय में राजेन्द्र यादव के जन्म से लेकर आज तक के जीवनक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है । उनके व्यक्तित्व निर्माण में घर,परिवार,पिता,पत्नी, आदि का भी योगदान रहा । उसे इसमें देखा है । उनके साहित्यिक कृतित्व पर सरसरी नजर डाली है ।

द्वितीय अध्याय में यादव जी की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । इस अध्याय में उनकी सभी प्रकाशित कहानी संग्रहों का सामान्य परिचय दिया है । साथ ही उनके कहानियों की विशेषताएँ देखी है ।

तृतीय अध्याय इस शोध-प्रबन्ध की जान है । इसमें यादव जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है । यादव जी की कहानियों में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक,धार्मिक, आर्थिक समस्याओं का मूल्यांकन किया है ।

चतुर्थ अध्याय है उपसंहार । यह प्रबन्ध के विषय का सार रूप है । यादव जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में रूप में देने का प्रयास किया है ।

प्रबन्ध के अन्त में परिशिष्ट दिया है । परिशिष्ट के पूर्वार्ध में राजेन्द्र यादव जी की रचनाओं की सूची दी है । परिशिष्ट के उत्तरार्ध में सहाय्यक संदर्भ ग्रंथो की सूची दी है । साथ में प्रत्येक ग्रंथ के प्रकाशक एवं संस्करण दिया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहाय्यता करनेवाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहीत करनेवाले मेरे श्रध्देय गुरुजन ,हित्त -

चिंतको एवं अत्मिय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझाता हूँ।

कृतज्ञता - ज्ञापन --

लघु शोध कार्य का संकल्प श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.के.पी.शाहा जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। आपके सहयोग के बीना यह कार्य कैसे सम्पन्न होता ? ` गुरूबीन कौन बतावे बाट ` । आपने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्ततक महत्वपूर्ण सूझाव दिए। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजुद आपने इस लघु शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशिर्वाद का मैं निरन्तर अभिलाषी रहूँगा।

आदरणीय डॉ.वसंत मोरे, डॉ.व्ही.व्ही.द्रवीड, प्रा.मिस रजनी भागवत, प्रा.वेदपाठक, प्रा.तिवले, प्रा.मुजावर ,प्रा.कणबरकर, प्रा.शिरेमठ,डॉ.अर्जुन चव्हाण का आशिर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है, उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

महिला महाविद्यालय ,उँब्रज के प्राचार्य ई.जी.निकम तथा जिस कॉलेज में सेवारत हूँ उस लक्ष्मीबाई माऊराव पाटील महिला महाविद्यालय के प्राचार्य आर. व्ही.यादव, मेरे सभी सहयोगी प्राध्यापक, संस्था के पदाधिकारी एवं कर्मचारियों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। अत: इन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना फर्ज समझाता हूँ।

मित्रवर प्राध्यापक मारूफ मुजावर, हिन्दी विभाग प्रमुख, महिला

महाविद्यालय, उंब्रज ने मुझे दिनो-दिन अपने कार्य में बने रहने के स्नेह एवं सद्भावपूर्ण सुझाव देकर अपनी मित्रता की प्रामाणिकता सिध्द कर दी है। उसके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

माता-पिता एवं मित्रों का आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मेरे साथ थी। बहन के नाते कु.पुष्पा ,बेबी तथा जयश्री ने जो सहायता की उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति आभारी हूँ। महिला महाविद्यालय सोलापुर के ग्रंथपाल सी.एम.पाटील के प्रति आभारी हूँ।

अन्त में इस शोध-प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रुप से टंकलिखित रुप देने का काम श्रीयुत बाळकृष्ण रा.सावंत,जी ने किया, उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु-शोध प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखता हूँ।

आपका कृपापार्थी

Bhilare

(प्रा.भारत भिलारे)

शोध-छात्र

कोल्हापुर।

दिनांक :२५:६:१९९३।